Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.831
Volume - 7, Issue - 05, May - 2024

DOIs:10.2018/SS/202405001 --:-- Research Paper / Article / Review

हिंदी फ़िल्मी गीतों की बढ़ती मकबूलियत का सबब

डॉ. रतन लाल
सहायक प्रोफेसर (हिंदी)राजकीय महाविद्यालय रेवाड़ी(हरियाणा), PIN-123401
नजदीक- नगर परिषद रेवाड़ी, भाड़ावास गेट के पास(बड़ा तालाब)
Email- rattanlal750@gmail.com

शोध सार: भाषा के आविष्कार के साथ ही गीत का मनुष्य से अटूट सम्बंध रहा है। गीत काव्य का ही रूप है। गेयता गीत का अभिन्न अंग है। हमारे देश में जीवन की हर अवस्था में गीतों का महत्व है। जन्म से मृत्यु तक कोई भी प्रयोजन गीतों बिना सम्पन्न नहीं होता। फिर हिंदी फिल्में बगैर गीतों के अपना काम कैसे चला सकती हैं। हमारी हिंदी फिल्मों में जीवन के प्रत्येक रंग के गीत समाहित होते हैं। देश-प्रेम, वात्सल्य, प्यार, विश्व-बंधुत्व, भ्रष्टाचार का विरोध, विश्व-शांति, युद्ध की विभीषिका पर प्रकाश और पर्यावरण संरक्षण इत्यादि सभी मुद्दों पर गीत लिखे गए हैं। ये गीत भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में गुनगुनाए जाते हैं। ये हिंदी फिल्मी गीत हमारे दिल को छूते हैं। इन गीतों की भाषा बिल्कुल सरल होती है। सिनेमा के आरंभिक दौर में रेडियो और टीवी ने इन गीतों को जनमानस तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। आधुनिक युग में इंटरनेट ने प्रत्येक व्यक्ति तक हिंदी फिल्मी गीतों को पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

बीज शब्द: फ़िल्म, मकबूलियत, गीत, सिनेमा, रेडीयो, इंटरनेट, देशप्रेम, अदीब, सरल, ज़बान, भूमिका, माध्यम ।

1. प्रस्तावना: आदिकाल से ही गीत मनुष्य के आंतरिक भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। गीत में ही कविता का आरंभिक स्वरूप नज़र आता है। रामायण, महाभारत और श्रीमद् भागवत गीता भी काव्य में ही लिखी गई हैं। गीत ने इंसानियत को हर दौर में जगाया है। गीत का अर्थ है- गाना और गुनगुनाना। मनुष्य की भावना और रागात्मकता के साथ गीत का विकास हुआ। यही कारण है कि शुरुआत में ये लोकगीतों के रूप में मौखिक परंपरा के रूप में विद्यमान थे। कालांतर में गीत लिखित परंपरा में वैदिक ऋचाओं के रूप में प्रवाहमान है। समाज में हर अवसर पर गीत गाए जाते हैं। भारतीय समाज में गर्भ में भ्रूण के पनपने से व्यक्ति की मृत्यु उपरांत तक गीत गाने की परंपरा है।डॉ. हरिवंश राय बच्चन ने गीत की अहमियत पर अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है- "गीत चेतना के सिर कलंगी, गीत खुशी के सर पर सेहरा/ गीत विजय की कीर्ति पताका, गीत नींद गफलत पर पहरा"[1]

मां के दूध के साथ बच्चों को जो लोरी मिल रही है, वह गीत का ही रूप है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गीत मनुष्य की मातृभाषा है। गीत को अंग्रेजी में लिरिक कहते हैं। लिरिक की उत्पत्ति 'lyre' नामक वाद्य यंत्र से हुई। अतः lyre नामक वाद्य यंत्र का सहारा लेकर जिस रचना को गाया जाए, वह गीत कहलाती है। गायन गीत का प्रधान तत्व है। 1913 ईस्वी में दादा साहब फाल्के द्वारा निर्मित भारत की पहली मूक फ़िल्म 'राजा हरिश्चंद्र' से ही गीत भारतीय फ़िल्म के अभिन्न अंग रहे हैं। मूक फिल्मों के दौर में भी संगीत सजीव रूप में प्रस्तुत किया जाता था-" कुछेक साजिंदे परदे के सामने एक 'पिट' में बैठ जाते और फ़िल्म की विषय-वस्तु के अनुसार अनुकूल संगीत बजाते रहते।"[2] उन फिल्मों को देखने से यह आभास

होता है कि सिनेमा का ही साउंड सिस्टम खराब हो गया है। कलाकार आपस में बातें कर रहे हैं। गीत भी गा रहे हैं। बोलती फिल्मों तक यह सिलसिला चलता रहा।

आलम आरा(1931) फिल्म के रिलीज होने के साथ ही हिंदी फिल्म जगत में एक नये दौर की शुरुआत होती है। इस फिल्म का पहला गीत वजीर मोहम्मद खान की आवाज में रिकॉर्ड किया गया। फिल्म में इन्होंने फकीर की भूमिका भी निभाई थी। यह गीत था -"दे दे खुदा के नाम पर प्यारे..."[3] कालांतर में लगभग सभी फिल्मों में गीत आते रहे।

पांचवें दशक में "मेरा जूता है जापानी ....फिर भी दिल है हिंदुस्तानी"[4] गीत ने सारी दुनिया में धूम मचा दी। यह गीत आज भी लोगों की जुबान पर है।गीतकार नीरज का लिखा गीत-"कारवाँ गुजर गया...."[5] जब मुशायरों में पढ़ा गया तो इतना मकबूल नहीं हुआ, लेकिन रेडियो व सिनेमा ने इस गीत को जन-जन में लोकप्रिय बना दिया। ये है किसी गीत को मशहूर करने में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का योगदान। आम आदमी की ज़बान में लिखे गीत शीघ्रता के साथ जनमानस के दिल में उतरते हैं। साहित्यिक लेखन तो चंद लोगों तक ही पहुंच पाता है लेकिन फिल्मी गीत का दायरा बहुत विशाल है। एक अनपढ़ आम आदमी भी इसकी परिधि में आता है।

1936 ईस्वी में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना लखनऊ में हुई तथा 'इप्टा' की नींव 1943 ईस्वी में रखी गयी।1947 ईस्वी में स्वतंत्रता के बाद इन दोनों समूहों के अदीबों-प्रेम धवन, साहिर, मजरूह सुल्तानपुरी, शैलेंद्र कैफ़ी आज़मी, सरदार अली जाफरी, मजाज इत्यादि ने हिंदी फिल्मों की ओर रोजी-रोटी के लिए अपना रुख किया। फ़िल्म निर्माण में तो इन प्रगतिशील अदीबों की कोई सीधी दखलंदाजी नहीं थी, लेकिन गीत लेखन के द्वारा इन्होंने हिंदी फिल्मों में मनोरंजन के साथ सामाजिक सरोकारों को भी दर्शाया। फिल्मों में आने से पूर्व ही ये अदीब साहित्य में अपना परचम बुलंद कर चुके थे। 1943 ईस्वी में साहिर लुधियानवी की 'तल्खियां' शोहरत की ऊंचाइयों को छू चुकी थी। साहिर लुधियानवी की अनेक नजमों को फिल्मों में प्रयोग किया गया। मजरूह सुल्तानपुरी की "हम हैं माता-ए-कूचा ओ बाज़ार की तरह..."[6] ग़ज़ल को हूबहू दस्तक(1970) फ़िल्म में प्रयोग किया गया।'पचास से लेकर साठ के दशक तक कुछ गीत हिंदी फिल्मों में ऐसे आए हैं जो किसी भी तरह से साहित्यिक रचनाओं से कम नहीं हैं।'[7] इसके उपरांत के बरसों में निदा फ़ाज़ली, जावेद अख्तर, नीरज, शाहरयार, इब्राहिम अश्क, प्रसून जोशी, इरशाद कामिल इत्यादि ने हिन्दी फिल्मी गीतों के कोष को समृद्ध किया।

हिंदी फिल्मी गीतों की मकबूलियत के इजाफे में दो चीजों ने अहम भूमिका निभाई है- मीडिया और फिल्मी गीतों की विषय-वस्तु ने। आम आदमी से जुड़े गीत ही उसके दिल में जगह बना पाते हैं, जैसे- "ज़िन्दगी की यही रीत है, हार के बाद ही जीत है..."[8], "आदमी मुसाफिर है आता है जाता है....."[9] तथा "यह देश है वीर जवानों का अलबेलो का मस्तानों का...."[10]

समाज, संस्कृति, सांझे सुख-दुख और मूल्य से संबंधित गीत ही सर्वकालिक होते हैं। यह भी सत्य है कि इसी बीच कुछ अश्लील गीत भी देखने में आए हैं, जैसे- "सरकाए लो खटिया जाड़ा लगे..."[11] व "ऊंचे से ऊंचा बन्दा पॉटी पे बैठा नँगा..."[12] इत्यादि। लेकिन जनता ऐसे बेहूदा गीतों को नकार देती है। उनके जहन में तो केवल "ना कजरे की धार ना

मोतियों का हार...(मोहरा फ़िल्म 1994) और "हर करम अपना करेंगे ए वतन तेरे लिए, दिल दिया है जां भी देंगे ए वतन तेरे लिए...(कर्मा फ़िल्म 1986) सरीखे गीत ही जगह बना पाते हैं।

कई फ़िल्मी गीतों में जीवन दर्शन प्रतिबिंबित होताहै, जैसे-"जीवन से भरी तेरी आंखें..."(फ़िल्म 'सफर',1970), " सजन रे झूठ मत बोलो खुदा के पास जाना है....(तीसरी कसम,1966)," यह पब्लिक है यह सब जानती है....(रोटी,1971) जैसा गीत प्रजातंत्र में जनता की शक्ति को प्रकट करती है। हिंदी फिल्मी गीतों ने नारी के शोषण पर भी प्रकाश डाला है। किसी भी समाज में देह का व्यापार एक कलंक है। इसके लिए उस समाज की आर्थिक व्यवस्था उत्तरदायी होती है। धन के अभाव के कारण कुछ मजबूर औरतें जिस्मफरोशी करती हैं। साधना(1958) फिल्म में साहिर लुधियानवी ने इसी तथ्य पर प्रकाश डाला है-

"संसार की हर एक बेशर्मी गुरबत की गोद में पलती है/ चकलों में आकर रूकती है, फाकों से जो राह निकलती है/ औरत ने जन्म दिया मर्दों को मर्दों ने उसे बाजार दिया/ जब जी चाहा मसला कुचला जब जी चाहा दुत्कार दिया"[13]

हिंदी फिल्मी गीतों ने राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आजादी से पहले बनने वाली फिल्मों में पौराणिक कथाओं के माध्यम से अंग्रेजों पर निशाना साधा जाता था। आजादी के बाद बनी फिल्म शहीद(1965) का गीत "मेरा रंग दे बसंती चोला.."भारतीयों के दिलों में देश भक्ति की भावना जगाता है। हिंदी फिल्म संगीत एक ऐसा गुलशन है जिसमें सभी तरह के गीतों के फूल खिल रहे हैं। व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार कोई भी गीत सुन सकता है । गीतों के इस गुलदस्ते में प्यारी बेटी की विदाई पर "बाबुल की दुआएं लेती जा...."[14] देश की सांस्कृतिक धरोहर पर, "गंगा तेरा पानी अमृत...."[15], परस्पर सहयोग की भावना पर, “साथी हाथ बढ़ाना...."[16], मजदूरों के अधिकारों की दिशा पर "हम मेहनतकश इस दुनिया से जब अपना हिस्सा मांगेंगे, एक बाग नहीं एक खेत नहीं हम सारी दुनिया माँगेंगे...." (मज़दूर फ़िल्म, 1981) गीत के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

रिश्वतखोरी समाज को दीमक की तरह चाट जाती है। इस बुराई के खिलाफ साहिर ने

“रिश्वत से मुंह बंद थे सबके, अब फूटेंगे भांडे..." (आदमी और इंसान ,1969), युद्ध की विभीषिका पर "हम अपने खेतों में गेहूं की जगह चावल की जगह बंदूकें क्यों होते हैं...."(बॉर्डर ,1997) गीत, तो मासूम जानवर की हत्या पर "नफरत की दुनिया छोड़ के प्यार की दुनिया में खुश रहना मेरे यार..." (हाथी मेरे साथी,1971) गीत भी सुन सकते हैं। समाज की कुप्रथाओं पर भी हिंदी फिल्मी गीतों ने जमकर प्रहार किया है। दहेज प्रथा की विद्रूपता पर "इक्कीस तारीख शुभ मुहूर्त"(2018)फ़िल्म के माध्यम से वार किया गया है -

"फुकरा चला बाज़ार में ले बेटे का रेट
और बेटी उसकी चाहिए जो हो धन्ना सेठ
शीघ्र विवाह थोड़ा स्टेटस मांगे हम
शीघ्र विवाह थोड़ा कैश चाहे हम"[17]

1947ईस्वी में देश के विभाजन ने अनेक निर्दोष स्त्री, पुरुष व बच्चों की जान ली, लाखों नारियों की इस्मत लूटी और लाखों लोग बेघर हो गए। अमृता प्रीतम के उपन्यास पर आधारित पिंजर(2003) फ़िल्म में गीतकार गुलज़ार ने विभाजन की त्रासदी को प्रकट किया है-

"वतना वे ओ मेरेया वतना वे ....
बंट गए तेरे आंगन बुझ गए चूल्हे सांझे
लूट गईं तेरी हीरें, मर गए तेरे रांझे
कौन तुझे पानी पूछेगा, फसलें सींचेगा
गीटे कंचे बांट के कर ली कुट्टी वतना वे..."[18]

भ्रष्ट राजनीति की पोल खोलने में भी हिंदी फिल्में पीछे नहीं रही हैं। हर दौर में फिल्मों में राजनीतिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है। नोट पे चोट (2018) फ़िल्म के गीत में राजनीति के इसी रूप को दर्शाया गया है-

"सब पैसे की मोह-माया देश के लिए कौन आगे आया/ जवानों ने खून बहाया/ नेताओं ने घर बनाया/ रोना धोना बस दो दिन का हक़ के लिए लड़ना बस दो दिन का "[19]

मानव जीवन के सभी पहलुओं को हिंदी फिल्मी गीतों में दर्शाया गया है। जीवन का कोई भी रंग गीतों से अनछुआ नहीं रह गया है। आने वाले समय में इस विपुल कोश में और वृद्धि होगी। भारत की सीमाओं से परे हिंदी फिल्म संगीत को लोकप्रियता हासिल करने का सबसे बड़ा श्रेय ' बिनाका गीत माला' प्रोग्राम को दिया जाता है । यह कार्यक्रम श्रीलंका के सीलोन रेडियो स्टेशन द्वारा उद्घोषक जनाब अमीन सियानी की दिलकश आवाज में प्रस्तुत किया जाता था। यह प्रोग्राम 3 दिसंबर 1952 से आरंभ होकर 4 अप्रैल 1994 तक प्रसारित हुआ। प्रत्येक बुधवार को रात 8:00 बजे से 9:00 तक उसे समय के 14 फिल्मी गीत सुनाए जाते थे । गीतों के साथ-साथ फिल्मों से संबंधित अन्य ज्ञानवर्धक जानकारियां भी श्रोताओं को दी जाती थीं। बिनाका गीतमाला के सारे प्रोग्राम भी इंटरनेट पर सुन जा सकते हैं । फिल्मी गीतों के मकबूलियत बढ़ाने में रेडियो के महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता। विविध भारती पर फिल्मी गीतों से सम्बंधित अनेक कार्यक्रम पेश किए जाते रहे हैं। इससे भी लोगों में फिल्मी गीतों के प्रति रुझान बड़ा है। रेडियो एफएम और अनेक टीवी चैनलों पर अंताक्षरी, रंगोली, भूले बिसरे गीत, आवाज़ दे कहां है आदि शीर्षकों से हिंदी फिल्मी गीतों का प्रसारण किया जाता है। अवाम में फिल्मी गीतों के प्रति रुझान बढ़ाने दिशा में समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन दोनों माध्यमों में भी फिल्मी गीतों से संबंधित खूब रचनाएं प्रकाशित होती हैं।

हिंदी फिल्मी गीतों को ख्याति दिलाने में इंटरनेट के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। आजकल रेडियो, टीवी और सिनेमा का स्थान मोबाइल ले ले लिया है। मोबाइल में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। इस सुविधा के द्वारा हम यूट्यूब पर किसी भी फिल्मी गीत को सुन सकते हैं। फिल्मी गीतों के प्रसार में सोशल मीडिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया पर अनेक ग्रुप बने हुए हैं, जैसे- सुर बोले मन डोले, रफ़ी फैन क्लब, पल दो पल का शायर हूं इत्यादि। इन ग्रुपों के सदस्य फिल्मी गीतों और उनसे संबंधित अन्य जानकारी को आपस में 'शेयर' करते रहते हैं।

हिंदी सिनेमा ही वास्तव में भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदी फिल्म संगीत देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य करता है। हिंदी को पूरे देश में राजभाषा बनाने के सवाल पर देश के कई हिस्सों में विरोध की झलक उभरती है लेकिन भारतवर्ष के सभी राज्यों में लोग हिंदी फिल्मी गीतों को बड़े प्यार से सुनते और गाते हैं। हिंदी फिल्मी गीतों का जादू सबके सिर चढ़कर बोलता है। ये गीत उनके दिल को छू लेते हैं। भारतीय समाज में ही नहीं बल्कि विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में फिल्मी गीतों की अहम भूमिका है। अमेरिका और इंग्लैंड के रेस्टोरेंट में भी हिंदी फिल्मी गीत सुनाई पड़ते हैं। फ़िल्म समीक्षक शुभ्रा शर्मा ने एक स्थान पर लिखा है,"आवारा हूं आवारा हूं ...तथा 'मेरा जूता है जापानी यह पतलून इंग्लिशतानी' तो देश और भाषा की सीमाओं से आगे बढ़कर पूरे सोवियत संघ में दोहराए जाते हैं। मैंने खुद मास्को यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर चेलिशवे के साथ ये गीत गाए हैं।" [20] हिंदी फिल्मी गीत विदेशियों के दिलों को छू रहे हैं। चीन हो या रूस, एशिया हो या यूरोप, सभी विदेशी हिंदी न समझते हुए भी हिंदी फिल्मी गीत गुनगुनाने लगते हैं।" रूस में राज कपूर के प्रति रहा जुनून इसका जीवंत उदाहरण है।"[21]

2. निष्कर्ष: आज पूरे विश्व में हिंदी फिल्मी गीतों की मकबूलियत बढ़ती जा रही है। हिंदी फिल्मी गीत जीवन के हर पहलू पर प्रकाश डालते हैं। इन गीतों के भाव और भाषा आम आदमी को मुतासिर करती है। रेडियो, टीवी और इंटरनेट ने हिंदी फिल्मी गीतों के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाई है। आधुनिक दौर में फिल्मी गीतों पर अपने देश के ही नहीं बल्कि विदेशों के विश्वविद्यालयों में अनेक शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं। हिंदी फिल्मी गीतों पर शोध कार्य का यह कारवाँ अनवरत जारी रहेगा।

संदर्भ सूची:

1. माधव कौशिक, नवगीत की विकास यात्रा, हरियाणा साहित्य अकादमी, संस्करण 2007, पृष्ठ संख्या 2
2. बहुवचन पत्रिका, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, (अक्टूबर-दिसम्बर 2013), पृष्ठ 106
3. वही, पृष्ठ 107
4. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म श्री 420)
5. www.Hindigeetmala.com. (फ़िल्म नयी उम्र की फसल)
6. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म दस्तक)
7. समसामयिकसृजन(पत्रिका), विकासपुरी नई दिल्ली, (अक्टूबर 2012- मार्च 2013), पृष्ठ 40
8. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म मिस्टर इंडिया)
9. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म अपनापन)
10. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म नया दौर)
11. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म राजा बाबू)
12. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म दम मारो दम)

13. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म साधना)
14. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म नील कमल)
15. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म गंगा तेरा पानी अमृत)
16. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म नया दौर)
17. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म इक्कीस तारीख़ शुभ मुहूर्त)
18. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म पिंजर)
19. www.Hindigeetmala.com (फ़िल्म नोट पे चोट)
20. आजकल पत्रिका, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, अक्टूबर 1012, पृष्ठ 38
21. दैनिक ट्रिब्यून (हिंदी समाचार-पत्र), सम्पादकीय (09.08.2012)